फरीदाबाद

# मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com>

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 288 1/– जून 2012

# आप–हम क्या–क्या करते हैं... (19)

✱अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✱सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✱बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ वर्तमान समाज व्यवस्था में व्यक्ति अधिकाधिक गौण हो रही-रहा है जबकि नई समाज रचना के लिये हर व्यक्ति की सक्रियता का महत्व है, प्रत्येक व्यक्ति महत्वपूर्ण है। ✱कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

✱ **33-34 वर्षीय मजदूर :** सुबह 5 बजे उठता हूँ। फ्रैश हो कर भोजन बनाने के लिये पत्नी को उठाता हूँ। स्नान। नाश्ता। भोजन का डिब्बा ले कर साइकिल से बदरपुर के लिये सवा सात बजे चल देता हूँ।

*साइकिल और झुग्गी बहुत जरूरी हैं। फरीदाबाद में सैक्टर-33 में 1994 में एक झुग्गी बस्ती में 1300 रुपये में झुग्गी खरीदी थी। फरीदाबाद ही नहीं बल्कि ओखला में नौकरी करते समय भी साइकिल से गया-आया हूँ और बहादुरगढ में फैक्ट्री में काम करता था तब भी कई बार फरीदाबाद तथा बहादुरगढ के बीच साइकिल से यात्रा की – सुबह भोजन कर चलना, 3½ घण्टे में बहादुरगढ पहुँच जाना, फिर साँय चल कर 3½ घण्टे में साइकिल से फरीदाबाद लौट आना।*

7 बज कर 40 मिनट पर बदरपुर पहुँच जाता हूँ। फैक्ट्री में साथ काम करते और बदरपुर में किराये पर रह रहे एक मजदूर के यहाँ साइकिल रखता हूँ। कम्पनी की बस 7 बज कर 50 मिनट पर बदरपुर पहुँचती है। सैक्टर-80 नोएडा फेज-2 स्थित फैक्ट्री पर 8½ बजे बस पहुँच जाती है।

*पूर्वी उत्तर प्रदेश में एक गाँव में जन्म हुआ। पिताजी के पास चार बीघा जमीन, एक बैल, दो भैंस और एक गाय थी। एक बैल वाले पड़ोसी से साझा करके पिताजी हल चलाते। यह 1997 तक चला – पड़ोसी ने अपना बैल बेचा और तब से पिताजी ट्रैक्टर से खेत जुतवाते हैं।*

*नाना की मृत्यु पर नानी ने उनकी जगह कोलकाता में नौकरी की। नानी ने माँ को पाँचवीं तक पढाया। पहले पति की मृत्यु पर माँ का दूसरा विवाह। पिताजी अनपढ हैं। माँ मुझे पढाती थी। इधर-उधर थोड़ा पढने जाने के बाद मेरा नाम सीधे पाँचवीं में लिखवाया। छठी में पढता था तब बहुत बीमार पड़ा। सोखा-ओझा के पास ले गये। फिर छोटे डॉक्टर के पास ले गये। और फिर बड़े डॉक्टर के पास..... बचेगा नहीं, गाँव लौटते समय तनाव में पिता ने मुझे नाले में फेंक दिया। माँ ने निकाला, साफ किया, रोती माँ को एक बुजुर्ग ने गोरखपुर ले जाने को कहा। खर्चा.....47,000 रुपये कर्जा हो गया। माँ के सब गहने गिरवी। गाँव के लोगों से 6 रुपये सैंकड़ा प्रतिमाह ब्याज पर पैसे उधार लिये।*

8 बज कर 55 मिनट पर फैक्ट्री में प्रवेश करता हूँ। कपड़े बदलना, पानी-पेशाब के बाद मशीन शुरू करना। स्टील पर पॉलिश करता हूँ। बहुत मेहनत का काम है। चोटें भी लगती रहती हैं।

*दसवीं में फेल हुआ। मेरी बीमारी के कुछ समय बाद भाई न्यारा हो गया था – पिताजी ने उसे जमीन नहीं दी और वह गाँव में मजदूरी तथा बटाई पर खेती से पत्नी-बच्चों को पालता है। कर्जा देने वालों के तकाजे देखे। हाथ में स्कूल की एक पुस्तक और जेब में विद्यालय का पहचान-पत्र रख कर दसवीं फेल साथी के साथ बिना टिकट के पंजाब के लिये गाड़ी में बैठे। पंजाब में पुलिस के ब्लैक कमाण्डो जगह-जगह दिखे। गाँव का एक वहाँ गाय, भैंस का दूध निकालने, नहलाने, चराने, गोबर उठाने का काम करता था। अच्छा नहीं लगा। पंजाब से दिल्ली में एक अन्य गाँव वाले के पास पहुँचे और उसने फरीदाबाद में जीजा के पास पहुँचाया। अक्टूबर 1993 में डी एल एफ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट फेज-1 में इलाइट फैक्ट्री में लगा। ट्रैक्टर के स्टेयरिंग, पिस्टन, बुश की कास्टिंग होती थी – मिट्टी कूटना, साँचा बनाना, पिघला लोहा डालना। आठ घण्टे ड्युटी, 1600 रुपये तनखा, ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। पैदल जाना-आना। खुराकी के 350 रुपये और बाकी सब पैसे कर्ज उतारने घर भेजता। सात महीने काम किया..... उसी क्षेत्र में 1800 रुपये तनखा में बी पी एल फैक्ट्री में लगा। सैम्पलिंग जहाँ रंग तैयार होते वहाँ 8 घण्टे की ड्युटी की, रंगाई-छपाई में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी। दो पैसे अधिक कमाने लायक बनने के लिये ड्युटी के बाद एक वर्कशॉप में रोज दो घण्टे मैटल पॉलिश का काम सीखता। दिमाग में एक ही बात चलती रहती थी: पैसा। ज्यादा कमाना है, कम से कम खर्च करना है, कर्जा उतारना है। पहनने के लिये सैकेण्ड हैण्ड कपड़े लेता था।*

*दिल्ली में तेखण्ड में एक वर्कशॉप में 2000 रुपये तनखा में मैटल पॉलिश के काम में लगा। साइकिल खरीदी – एक घण्टे में तेखण्ड पहुँच जाता था। फिर वहीं और उसी तनखा में दूसरी वर्कशॉप में लगा। और फिर डी-45 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 2500 रुपये तनखा में पीतल पर पॉलिश के काम पर लगा। पाँच महीने बाद नजदीक के* **(बाकी पेज चार पर)**

# फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.1.2012 से : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4847 रुपये (8 घण्टे के 186 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5497 रुपये (8 घण्टे के 211 रुपये)।* एक पता : श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ । ●1 अप्रैल 2012 से **दिल्ली सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक को मासिक 7020 रुपये (8 घण्टे के 278 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 7748 रुपये (8 घण्टे के 298 रुपये), कुशल श्रमिक को मासिक 8528 रुपये (8 घण्टे के 328 रुपये)। एक पता: श्रम आयुक्त, 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली–110054

**भूषण स्टील मजदूर :** "प्लॉट 26 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में 200 वरकर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रविवार को सुबह 8½ से दोपहर 2 बजे तक काम की बोलते हैं पर साँय 5 तक करवाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान मात्र 14 रुपये प्रतिघण्टा। दोनों शिफ्टों में 14-15-16 वर्ष आयु के 40 बच्चे काम करते हैं और उनकी तनखा 4000-4500 रुपये। बड़ों की तनखा 4500-4800 रुपये। छोटे-बड़े 200 मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं हैं। भूषण स्टील की साहिबाबाद फैक्ट्री से लोहे की पाइप आती हैं और यहाँ कटिंग के पश्चात **ओमैक्स, सेन्चुरी, एकता, वैंकटेश्वर ऑटो, स्पीडोमैक्स, ऑटो विजन, ऑटोटेक, ऑटो टूल** आदि फैक्ट्रियों को भेजी जाती हैं। अनलोडिंग, कटिंग, लोडिंग में एक्सीडेन्ट होते हैं, यहीं दवा कर देते हैं। तनखा हर महीने देरी से, अप्रैल की 20 मई को दी। छोड़ने पर 15 दिन के काम के पैसे नहीं देते। गाली बहुत देते हैं, मारपीट भी करते हैं। सुपरवाइजरों के अलावा गड़बड़ी करने के लिये मजदूरों में 5-7 लोग रखे हैं जिनकी तनखा 7000 रुपये है।"

**भारत एक्सपोर्ट ओवरसीज श्रमिक :** "493 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 10-12 मास्टर तथा चैकर स्थाई हैं और 350 मजदूर ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। हैल्परों को 8 घण्टे के 145 रुपये, मोती-सितारे लगाने वालों को 160-170 रुपये, सिलाई कारीगरों को 180-200 रुपये। कहते हैं कि बायर पूछे तो 8 घण्टे के 270 रुपये बताना, ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से बताना। ड्यूटी सुबह 9 से रात 8½ रोज है और सप्ताह में 3-4 बार रात 1 बजे तक रोकते हैं। रविवार को भी आमतौर पर साँय 5½ तक काम। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। इधर 15 मई से ओवर टाइम नहीं है – मन्दी बता रहे हैं। रात 1 तक के लिये फुडिंग के 25 रुपये.... रेहड़ी पर पेट नहीं भरता, अप्रैल में इसे 35 रुपये करने की माँग करते हुये मजदूरों ने 25 रुपये नहीं लिये और नाइट लगाने, रात 1 बजे तक रुकने से इनकार किया। प्रोडक्शन इनचार्ज की जान-पहचान के कुछ लोगों को 8 घण्टे के 200-210 रुपये दिये जाते हैं – इन मजदूरों ने 25 रुपये ले लिये और सब मजदूरों के दबाव को बिखेर दिया। फैक्ट्री में **बटरफ्लाई, ओट्टो** आदि का माल बनता है। शौचालय बहुत गन्दे – पानी ही नहीं है।"

**नोकिया सीमेन्स नेटवर्क कामगार :** "साइबर सिटी, डी एल एफ फेज-3, गुड़गाँव में 40 देशों में काम करते इस बहुत बड़े ठेकेदार के चार मंजिल में फैले कार्यस्थल पर 6000 लोग काम करते थे। स्थाई 1000 से कम और ठेकेदारों के जरिये रखे 5000 से ज्यादा थे। मई माह में आधे लोगों की छँटनी कर दी है और हर रोज निकाल रहे हैं – कहते हैं काम नहीं है। कम्पनी टेलीकॉम क्षेत्र में **टाटा, एयरसेल** आदि के एक्सचेंज तथा टावर की मरम्मत करती है, तार बिछाती है। ऊँची तनखा वालों की भी छँटनी की गई है – तीन महीने की नोटिस पे लो और जाओ। कम्पनी ने लोगों को टीमों में बाँट रखा है। वेतन वृद्धि को कम्पनी गुप्त रखती है। कम्प्युटर डाटा इन्ट्री वरकरों की 2009 से वार्षिक वेतन वृद्धि की ही नहीं है – 2009 से तनखा मात्र 5025 रुपये है।"

**आलोक प्रिन्टर्स एण्ड पैकर्स वरकर :** "लाल सलाम कामरेड, हम लगभग 50 कर्मचारी आलोक प्रिन्टर्स एण्ड पैकर्स, सी-57/2 ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 स्थित कम्पनी में काम करते हैं। मैं अपना नाम इसलिये नहीं दे रहा हूँ क्योंकि आप जानते ही हैं कि आज का मजदूर वर्ग अपने स्तर से कितना नीचे गिर चुका है। इसका मुख्य कारण यह है कि आज का मजदूर सभी तरह के जुल्म या अत्याचार को सहने में सक्षम है। क्या करें ? हम आपके समाचार पत्र में विज्ञापन के लिये कुछ करतूत लिख रहे हैं जो 100% सत्य है। प्रबन्धक का काम है साधारण बात में गाली-गलौज या मारपीट तक करना। तनखा देते हैं 3600 रुपये प्रतिमाह परन्तु हस्ताक्षर 6667 रुपये पर करवाते हैं। भविष्य निधि के नाम पर पैसा काट रहे हैं परन्तु इसकी रसीद आज तक नहीं मिली है। काम 16 घण्टे करवाते हैं, ओवर टाइम सिंगल या उससे भी कम देते हैं। किसी भी मजदूर में यह क्षमता नहीं है जो विरोध करे। बोनस कभी नहीं देते हैं। छुट्टी का पैसा भी नहीं देते हैं। ओवर टाइम में सिर्फ एक चाय मिलती है। मालिक द्वारा सभी सुपरवाइजर को आदेश मिला हुआ है कि किसी भी कारीगर या हैल्पर को गाली दे कर काम करवाओ। हमारे जैसे कर्मचारी जब सोचते हैं कामरेड तो आँखों में आँसू आ जाते हैं कि इस देश में मजदूर वर्ग की क्या हालत हो गई है। यहाँ तक कि कोई भी कर्मचारी यदि शौच के लिये जाता है और थोड़ी देर हो जाये तो गाली-गलौज का शिकार होना पड़ता है। इस तरह की जिन्दगी जीने का अर्थ क्या है ? मुझे यह पता नहीं चलता कि क्या हौसला ले कर लोग जीना चाहते हैं। कामरेड, समय आने पर हम आपकी संस्था का अवश्य साथ देंगे। कृपया विज्ञापन छपवाने का कष्ट करें।"

**एस्कोर्ट्स मजदूर :** "सविनय निवेदन यह है कि एस्कोर्ट्स प्लान्ट-2, सैक्टर-13 (फरीदाबाद) जहाँ **फार्मट्रैक ट्रैक्टर** बनते हैं वहाँ ठेकेदारों के वरकर अधिक काम करते हैं परन्तु ठेकेदार किसी मजदूर को फण्ड की न तो स्लिप देते हैं, न ही पी. एफ. नम्बर बताते और न ही फण्ड राशि को पी. एफ. ऑफिस में जमा करते हैं। ढाई वर्ष हो गये। न कोई पर्सनल अधिकारी सुनता, न ही लीडर सुनते हैं। सब को कमीशन मिलता है। कहते हैं तो कहते हैं कि नौकरी छोड़ने के दो महीने बाद पैसे मिल जायेंगे। नौकरी छोड़ने पर चक्कर कटाते हैं और किसी को पता ही नहीं होता कि कितना पैसा कटा इसलिये जो जी में आया दे देते हैं। फण्ड के नाम पर काटते पैसों पर ब्याज भी नहीं देते। फैक्ट्री का नाम इण्डिया लेवल का और काम सबसे छोटे। क्या कम्पनी के पर्सनल विभाग की यह जिम्मेदारी नहीं है कि ठेकेदारों से हर वर्ष फण्ड की स्लिप दिलायें और विभागों में पता करें कि मजदूरों को स्लिप मिली कि नहीं।"

**अस्ती इलेक्ट्रोनिक्स श्रमिक :** "प्लॉट 399 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में काम करते 650 मजदूरों में दस प्रतिशत स्थाई मजदूर हैं और नब्बे प्रतिशत वरकर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। महिला मजदूर 400 हैं और इनकी दिन की 9 घण्टे की शिफ्ट है। साँय 5 से रात 2 और रात 2 से अगली सुबह 8 बजे की शिफ्टों में पुरुष मजदूर ही हैं। यहाँ **मिण्डा, हीरो, मारुति सुजुकी** वाहनों के हारनेस बनते हैं। उत्पादन कम पड़ जाता है, प्रोडक्शन के लिये दबाव डालते हैं, जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं। रविवार को महिला मजदूरों का 9 घण्टे ओवर टाइम, बी शिफ्ट वाले पुरुष मजदूरों को सी शिफ्ट में भी रोकना – 15 घण्टे फैक्ट्री में रहना अनिवार्य है। आज कल कम है पर वैसे महीने में ओवर टाइम 100 से 170-180 घण्टे। ओवर टाइम का भुगतान 44 रुपये प्रतिघण्टा है पर रविवार के 15 घण्टे के 500 रुपये ही देते हैं। तनखा कम है और मार्च में की वेतन वृद्धि से हम सन्तुष्ट नहीं हैं। अस्वस्थ होते हैं तब भी ड्यूटी करते हैं – कम्पनी 1000 रुपये उपस्थिति भत्ता देती है और महीने में एक छुट्टी करने पर 500 रुपये काट लेती है, दो छुट्टी करने पर 1000 रुपये कटने के संग दो दिहाड़ी भी जाती हैं।"

*ईस्टर्न मेडिकिट की 5 फैक्ट्रियाँ 22 मई से बन्द। स्थाई मजदूरों को अप्रैल की तनखा और मार्च के ओवर टाइम के पैसे नहीं दिये हैं।*

## निमन्त्रण

रविवार, 24 जून को सुबह 10 से देर साँय तक बातचीत के लिये आइये। मजदूर लाईब्रेरी में आपका स्वागत है। रास्ते के बारे में अप्रैल अंक देखें।

*महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें। अन्यथा भी, चर्चाओं के लिए समय निकालें।*

# ..जरूरी है नई राहें तलाशना

**क्लच आटो मजदूर :** "12/4 मथुरा रोड, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 406 स्थाई मजदूर, 250-300 कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे 150-200 मजदूर **मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, टेल्को, अशोक लेलैण्ड** वाहनों के संग-संग अमरीका, जापान, बंगलादेश, श्रीलंका, ईरान, इराक, कुवैत, सउदी अरब को निर्यात के लिये क्लच प्लेट बनाते हैं। कच्चा माल चीन से भी आता है और कम्पनी का गोदाम अमरीका में भी है। कम्पनी ने भिवाड़ी, राजस्थान में नई फैक्ट्री स्थापित की है। मैनेजिंग डायरेक्टर विजय मेहता के एक पूर्व मुख्य मन्त्री का बेटा होने की बातें। बैंकों से कर्ज – किस्तें नहीं भरना। केन्द्र सरकार की एक्साइज ड्यूटी के 12-14 करोड़ रुपये बकाया। ई.एस.आई. और पी.एफ. के पैसे जमा नहीं करना। गुड़गाँव ग्रामीण बैंक से मजदूरों द्वारा लिये कर्ज का भुगतान तनखा से किस्तों में करने के 40 लाख रुपये काट लेना पर जमा नहीं करना। मैनेजिंग डायरेक्टर द्वारा यूनियन के नेता बनाने...... लीडर की वर्कशॉप चलवाने की बातें। मजदूरों के वर्दी-जूते, एल टी ए और 5 महीने का ओवर टाइम बकाया, वेतन भुगतान में देरी। फरीदाबाद फैक्ट्री की जमीन के भाव बहुत ऊँचे – इधर मैट्रो का निर्माण इन्हें और बढा रहा है। फरीदाबाद फैक्ट्री से मशीनें भिवाड़ी ले जाने की योजना। ऐसे में फरवरी की तनखा मजदूरों को 15 मार्च को दी गई पर लीडरों को नहीं। फिर 12 अप्रैल को दो लीडरों को अहमदाबाद ट्रान्सफर के पत्र..... लिये नहीं, हड़ताल! मजदूर 12 अप्रैल से फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे। कम्पनी न्यायालय से 50 गज दूर वाला आदेश ले आई। टैन्ट लगा – दिन और रात मजदूर बैठे। पुलिस वैन 4-5 दिन फैक्ट्री में रही, खर्चा नहीं दिया, छोड़ गये। डी एल सी दो बार फैक्ट्री आया और बोला कि कम्पनी मान नहीं रही। तीन बार श्रम मन्त्री के घर गये, बोला कि यहाँ मत आओ, फैक्ट्री गेट पर रहो। मजिस्ट्रेट के साथ 5 मई को 200-250 पुलिसवाले आये, न्यायालय का आदेश, बना हुआ माल फैक्ट्री से निकाला गया। एस डी एम 17 मई को फैक्ट्री आया और बोला कि कम्पनी मान नहीं रही। सैक्टर-12 में न्यायालय में 25 मई को तारीख थी, कम्पनी चण्डीगढ में हाई कोर्ट चली गई।..... भुगतान नहीं करने पर राजस्थान में न्यायालय से मैनेजिंग डायरेक्टर की गिरफ्तारी का वारन्ट ले कर पुलिस आई। बड़ा साहब छिप गया है। तीस मई को दोपहर एक बजे फैक्ट्री के अन्दर मैनेजरों ने मजदूरों से बातचीत आरम्भ की और तीन बजे समझौता हो गया। नेताओं के ट्रान्सफर रद्द और आरोप-पत्र वापस। हड़ताल के 50 दिनों में से 25 दिन के पैसे दो किस्तों में कम्पनी देगी। मार्च की तनखा 5 जून को। अप्रैल के 11 दिन और हड़ताल के 12½ दिन के पैसे 15 जून को। बकाया वर्दी, एल टी ए आदि जुलाई में देंगे। मशीनें भिवाड़ी नहीं जायेंगी। तनखा समय पर देंगे। इन 50 दिनों में ज्यादातर कैजुअल वरकर और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूर नौकरी छोड़ गये हैं। फैक्ट्री में 1 जून से काम आरम्भ हो गया है। मार्च की तनखा 5 जून को दे दी है। लिखित समझौते का उल्लंघन कम्पनी करती रही है।"

**सीनियर फ्लैक्सोनिक्स श्रमिक :** "प्लॉट 89 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में इस वर्ष 9 जनवरी से फैक्ट्री के बाहर बैठे थे और 27 फरवरी को मजबूरी में समझौता कर हम अन्दर गये थे। मार्च में सामान्य उत्पादन हुआ। ठेकेदारों के जरिये रखे 120 में से जिन 60 को 48 दिन बाहर बैठने के बाद ड्यूटी पर लिया था उनके गेट पास और छुट्टी बिलकुल बन्द कर दिये तब 20 लोग नौकरी छोड़ गये। फिर 20 अप्रैल को अचानक मैनेजमेन्ट ने वैल्डरों को हैल्पर देने बन्द कर दिये। प्राडक्शन रजिस्टर में उत्पादन कम होने का कारण लिखने से धमका कर रोक दिया। जनवरी-फरवरी में बाहर बैठे थे तब ठेकेदारों के जरिये नये भर्ती किये 200 मजदूरों में कुछ लोग धमकाने के काम के लिये भी रखे गये हैं। मैनेजमेन्ट ने फिर 17 मई को पत्र दे कर एक मजदूर से कम उत्पादन का कारण पूछा और 19 को उत्तर मिलने के बाद निलम्बन-पत्र पकड़ाया, 12 बजे गार्डों ने फैक्ट्री से बाहर कर दिया। ए और बी शिफ्ट के मजदूर फैक्ट्री में इकट्ठे हुये तब ढाई बजे यूनियन से जुड़े 70 मजदूर काम बन्द कर बैठ गये – 125 मजदूर काम करते रहे। श्रम विभाग अधिकारी और पुलिस फैक्ट्री पहुँचे। समझौता नहीं हुआ। ए और बी शिफ्ट के मजदूर पुलिस की धक्का-मुक्की के बावजूद फैक्ट्री में जमे रहे। सी-शिफ्ट वालों को फैक्ट्री में प्रवेश नहीं करने दिया। थानेदार ने रात 11 बजे तक निकलने की धमकी दी। नहीं निकले। पुलिस जबरदस्ती करने लगी तब फैक्ट्री के अन्दर और बाहर नारेबाजी..... मारुति सुजुकी फैक्ट्री की बी-शिफ्ट छूटी और सीनियर फैक्ट्री से हो कर अलियर गाँव जा रहे मारुति सुजुकी मजदूर रुक गये, सीनियर फ्लैक्सोनिक्स मजदूरों के साथ खड़े हो गये। ढाई-तीन सौ मारुति मजदूरों को देख कर पुलिस ने हाथ खड़े कर दिये। मारुति मजदूर चले गये। रात करीब एक बजे एक बस और दो जिप्सी में पुलिस आई, पकड़-पकड़ कर 70 मजदूरों को फैक्ट्री से निकाल दिया। बीस मई से गेट बाहर बैठे हैं। मैनेजमेन्ट ने 21 मई को 7 और मजदूरों को निलम्बित कर दिया। श्रम विभाग में तारीखें : 21 की, 24 की, 28 की, 30 मई की, 7 जून की। मैनेजमेन्ट ने ठेकेदारों के जरिये रखे पुराने मजदूरों के लिये 21 मई को ही नोटिस लगा दिया था। कई यूनियनों के प्रतिनिधि डी सी से मिले। प्रदर्शन। मैनेजमेन्ट कहती है कि 6 को छोड़ कर अन्दर आ जाओ। अब 11 जून की तारीख।"

**हरसोरिया हैल्थकेयर कामगार :** "प्लॉट 110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 24 से 27 अप्रैल तक अन्दर बैठे मजदूर बाहर निकले और 28 अप्रैल से पुरानी कचहरी के पास असिस्टेन्ट लेबर कमिश्नर कार्यालय पर धरना आरम्भ किया। पहली मई से फैक्ट्री में उत्पादन आरम्भ। रोकने के प्रयास। पुलिस में 21 मजदूरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज। कुछ लोग 4 दिन जेल में रहे और बाकी लोग 24 घण्टे – जमानतें करवाई। धरना जारी। क्रमिक भूख हड़ताल आरम्भ की 23 मई से। ए एल सी के यहाँ 5 जून रात को मैनेजमेन्ट और यूनियन में समझौता। पुराने कैजुअल-ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की नौकरी समाप्त। स्थाई मजदूरों में 17 निलम्बित रहेंगे – तीन महीने में लेने का आश्वासन। केस वापस ले लिये जायेंगे। मैनेजमेन्ट की शर्त मान कर 7 बरखास्त मजदूर स्टाफ वाले बनेंगे – इन में दिसम्बर 2011 में बरखास्त 4 भी शामिल हैं।"

## नर्सों की हड़ताल

फरीदाबाद में बड़खल पुल के पास स्थित **एशियन इन्सटीट्युट ऑफ मेडिकल साइन्सेज** और नीलम पुल के पास स्थित **हैवेल्स के क्यू आर जी सेन्ट्रल अस्पताल** की नर्सों ने 7 मई को सुबह 8 बजे से हड़ताल आरम्भ कर दी।

एशियन अस्पताल की 330 नर्सों ने मार्च 2011 में बहुत कम तनखा, काम के बहुत अधिक बोझ की समस्याओं के समाधान के लिये अकेले-अकेले अनुरोध किये। मैनेजमेन्ट ने अनसुना किया। अक्टूबर में नर्से एक एसोसियेशन से जुड़ी और नवम्बर में 330 ने हस्ताक्षर कर मैनेजमेन्ट को पत्र दिया। साहब बोले कि जनवरी में तनखा बढा देंगे। नहीं बढाई और बोले कि अप्रैल की तनखा में बढा देंगे। इस पर 23 अप्रैल को मैनेजमेन्ट को नोटिस दिया कि समझौता नहीं हुआ तो 7 मई से काम बन्द कर देंगे। माँग-पत्र में 22 सूत्र हैं।

सेन्ट्रल अस्पताल की 130 नर्से एसोसियेशन से जुड़ी और 21 अप्रैल को वेतन वृद्धि तथा कार्यस्थितियों से सम्बन्धित 12 सूत्री माँग-पत्र मैनेजमेन्ट को दिया जिसमें समझौता नहीं होने पर 7 मई से हड़ताल की बात थी।

एशियन अस्पताल और सैन्ट्रल अस्पताल की मैनेजमेन्टों ने एक जैसे कदम उठाये। अदालत से हड़तालियों को दूर बैठाने के आदेश लाये। नर्स हॉस्टलों की बिजली-पानी काटे। सेक्युरिटी गार्डों के अलावा धमकाने के लिये लोग रखे। हड़ताली नर्सों पर बदनाम करने के आरोप। कई नर्सों की बरखास्तगी और निलम्बन के नोटिस।

नर्सों का समर्थन कई संगठनों ने किया। थू-थू होने पर हॉस्टलों की बिजली बहाल की। धरना और नारे। एशियन और सैन्ट्रल की नर्सों ने 15 मई को अन्य संगठनों के साथ प्रदर्शन किया। डी. सी. कार्यालय पर 21 मई को दोनों अस्पतालों की नर्सों और समर्थकों का धरना। उपश्रमायुक्त, एस डी एम, डी सी को ज्ञापन और समझौता वार्तायें। हड़ताली नर्सों का समर्थन करने और मैनेजमैन्टों से बात करने केरल के 6 संसद सदस्य आये। हरियाणा (बाकी पेज चार पर)

## आप-हम क्या-क्या करते हैं... (पेज एक का शेष)

*लिये फरीदाबाद में सैक्टर-27 सी में वैदित इंजीनियरिंग में 2400 रुपये तनखा में लगा। ढाई वर्ष काम किया। चमचों ने निकलवा दिया। ओखला फेज-2 में टी-7 स्थित फैक्ट्री में 2800 रुपये तनखा में लगा। यहाँ 4 घण्टे रोज ओवर टाइम लगता था इसलिये आली गाँव में 200 रुपये महीना में कमरा किराये पर लिया। फैक्ट्री से एक फिटर बहादुरगढ जाता था। बात की। बहादुरगढ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट में क्राउन ब्रास फैक्ट्री में 3000 रुपये तनखा में लगा। ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। बहादुरगढ में काम करते एक वर्ष हो गया तब ओखला में खुली मैटल पॉलिश फैक्ट्री में स्थाई नौकरी की बात। तनखा 2400 रुपये ही – जीजा ने बताया कि स्थाई नौकरी का फायदा बाद में मालूम होता है। ओखला फेज-1 में माइकल आराम एक्सपोर्ट में 2001 में स्टील पर पॉलिश के काम में लगा। एक घण्टे में 12 किलोमीटर साइकिल चला कर फैक्ट्री पहुँचता। व्यायाम क्या करना, मशीन पर खुद व्यायाम हो जाता है। स्टील को घिसने में इतनी मेहनत होती है कि शरीर का पसीना निकल जाता है। शरीर का पसीना निकल गया तो आधी बीमारी दूर हो गई...... 21-22 वर्ष आयु थी। थकता नहीं था। सोच थी कि स्थाई नौकरी मिली है, इसे छोड़ना नहीं है, उत्पादन ज्यादा करके कम्पनी को खुश करो – इस सोच के चक्कर में हम प्रदूषण तो बहुत बढाते ही थे, कम्पनी को बिगाड़ भी रहे थे।*

11 बजे चाय आती है। चाय के समय 15 मिनट हँसी-मजाक करते हैं। अब मैं हिसाब से काम करता हूँ। प्रदूषण से बचना है इसलिये ज्यादा प्रदूषण नहीं होने देता। अनुभव ने सिखाया है कि एक्स्ट्रा काम करना अपने पैरों पर तो कुल्हाड़ी मारना है ही, ज्यादा काम करना अपने सहकर्मियों की दुर्गत बढाना भी लिये है। इसलिये हिसाब से काम करना। एक बजे आधे घण्टे का भोजन अवकाश। फैक्ट्री में कैन्टीन स्टाफ के लिये है, मजदूरों के लिये नहीं।

*स्थाई नौकरी में शुरू में अच्छा लगा। आरम्भ के ढाई महीने दिन की ड्यूटी रही। फिर तीन-चार महीने एक हफ्ते दिन की और एक हफ्ते रात की शिफ्ट। और फिर दो वर्ष लगातार रात में ड्यूटी – दिन वाले पुराने थे, शिफ्ट नहीं बदलने देते थे। रात को काम में परेशानी ही परेशानी हैं – सोने की परेशानी और दिन में नींद पूरी नहीं हो पाती, खाना खाने में परेशानी, मिलने-जुलने में परेशानी। एतराज करने पर बोले कि छोड़ जाओ। मजबूरी में काम किया – पहले 10 घण्टे और फिर 12 घण्टे रोज रात में काम किया।*

*दिन वालों ने 2004 में मैनेजमेन्ट से लड़ाई शुरू की थी। मुझे नहीं मालूम था कि बात क्या है। सब हल्ला करने लगे और पुष्पा भवन में श्रम विभाग पहुँचे तब पता चला कि ओवर टाइम दुगुनी दर से तथा अन्य सहूलियतों की माँग थी। मैनेजर ने सब को ड्यूटी पर ले लिया। कुछ दिन बाद 4 की लिस्ट, फिर 4 की, और फिर 4 की लिस्ट – 12 मजदूर बाहर हो गये तब यूनियन के जरिये केस किया। फैक्ट्री चलेगी कि नहीं ? कई मजदूर हिसाब ले गये। मैंने लड़ने वालों के साथ रहने का तय किया और हिसाब नहीं लिया। कर्ज उतर चुका था, उसका तनाव नहीं था, उसका दबाव नहीं था।*

*2005 में डायरेक्टरों के बीच झगड़े की बात। हमें तनखा देनी बन्द कर दी। फैक्ट्री बन्द करेंगे. .... और उसी काम के लिये ओखला में दूसरे नाम से फैक्ट्री खोल ली। माँ ने कहा कि बेटा अन्त तक लड़ो। पिताजी और पत्नी ने कहा कि लड़ो। पिताजी ने गाँव से 700 रुपये सहायता भेजी। पत्नी ने फरीदाबाद में शाही एक्सपोर्ट फैक्ट्री में नौकरी की। समय मिलने पर मैंने पीस रेट पर दो-तीन घण्टे मैटल पॉलिश का काम किया। तनखा नहीं देने के संग-संग मैनेजमेन्ट ने फैक्ट्री में काम करवाना भी बन्द कर दिया था। यूनियन के जरिये श्रम विभाग में शिकायत की।*

*और, तारीखों के इन्तजार में फैक्ट्री गेट पर बैठे रहने की बजाय हम ओखला में अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के बीच गये। गत्तों पर अपनी बातें लिख कर शिफ्टें आरम्भ होने के समय ओखला औद्योगिक क्षेत्र में हम एक दिन एक स्थान पर खड़े हुये तो दूसरे दिन दूसरे स्थान पर। गत्ते ले कर हम दिल्ली में अन्य स्थानों पर लोगों के बीच गये। पचास किस्म की बातें रोज सुनने को मिलती थी। ध्यान में वही रखता जो मन को ठीक लगती थी। हम पुलिस से डरे नहीं और हम पुलिस से भिड़े भी नहीं। पुलिसवाले कहते हट जाओ तो हट जाते और फिर गत्ते ले कर वहीं आ कर खड़े हो जाते। कई तरह के लोगों का साथ मिला और हमारा हौसला बढता गया। कम्पनी का माल अमरीका में बिकता है और वहाँ पर मित्र गत्तों पर अपनी बातें लिख कर स्टोरों के सामने खड़े हुये। अमरीका में और यहाँ पर बड़ी सँख्या में लोगों के बीच गत्तों के जरिये बातें गई जिसका कम्पनी पर बहुत भारी असर पड़ा। पाँच महीनों की हमारी बकाया तनखायें दी गई। नये नाम से खोली फैक्ट्री में नौकरी की निरन्तरता बनाये रखते हुये हमें नियुक्ति-पत्र दिये गये। हमारे लिये, मित्रों के लिये, सहयोगियों के लिये, माता-पिता-पत्नी के लिये 2006 में खुशी ही खुशी।*

भोजन पश्चात एक पैंतीस पर मशीन फिर शुरू। मशीन चलाते समय दिमाग में बातें आती रहती हैं। आगे क्या करेंगे ? क्या नहीं करेंगे ? माँ-बाप ने पढाया तो हम स्टील घिस रहे हैं। हमारे बच्चे क्या करेंगे ?

*ओखला में नई फैक्ट्री एम. ए. डिजाइन नाम से थी। इसमें काम करते हमें डेढ वर्ष हो गया तब मैनेजमेन्ट फैक्ट्री को ओखला से नोएडा में सैक्टर-63 ले गई। कम्पनी ने दिल्ली से नोएडा बसें लगाई। इससे मुझे एक घण्टा और पहले जागना पड़ता है। डेढ साल बाद एक दिन अचानक कम्पनी ने बस बन्द कर दी। हमें नौकरी से निकालने के लिये कम्पनी ने जाल बुना था। हमारे अलावा भी कम्पनी ने ओखला में स्थाई मजदूर रखे थे और नोएडा में ठेकेदार के जरिये अलग से भी मजदूर रखे हैं। हम ने सामूहिक कदम उठाये और मित्रों ने सहयोग किया तब बस फिर शुरू की गई। ढीले पड़ रहे तालमेलों पर हम ने ध्यान दिया। तालमेल बढाने जरूरी...... वर्ष-भर पहले कम्पनी फैक्ट्री को नोएडा में सैक्टर-63 से सैक्टर-80 ले गई। बिना ट्रान्सफर लैटर दिये कम्पनी ने बड़ी सँख्या में लोगों को नये स्थान पर भेज दिया। सैक्टर-63 में गत्ते वाले हम 20 ही छोड़े थे – कम्पनी को आशा थी कि हम ट्रान्सफर लैटर के लिये अड़ेंगे और तब लटका कर हमें धार पर धर देगी। हमें सैक्टर-80 जाने को कहा तब हम ने ट्रान्सफर लैटर माँगे पर उनके लिये अड़े नहीं। बिना ट्रान्सफर लैटर हम सैक्टर-80 चले गये और वहाँ जा कर ट्रान्सफर लैटर माँगना जारी रखा। वर्ष-भर बाद अब जा कर ट्रान्सफर लैटर दिये हैं।*

साँय 4 बजे चाय और मट्ठी। फिर हम स्टील पॉलिश का आखिरी काम करते हैं – चमक खोलना। साँय 5 बजे स्नान का समय है और 5½ कार्ड पंच के साथ शिफ्ट समाप्त। शिफ्ट खत्म होने के बाद फैक्ट्री में पीस रेट पर काम करने से हम 20 लोग मना कर देते हैं पर अन्य मजदूरों से कम्पनी यह काम करवा रही है। बस पौने छह बजे फैक्ट्री से चलती है। रात 8 बजे मैं घर पहुँच जाता हूँ। थोड़ा घूमता हूँ। राह में मिलने वालों से नमस्ते होती है, किसी के घर बात करने नहीं जाता। हाँ, बिहार से आया और फरीदाबाद में काम रहा एक दोस्त तथा मैं चार-पाँच वर्ष से रोज एक-दूसरे को देखने जरूर जाते हैं, बैठते नहीं। पत्नी और बच्चे से बातें करता हूँ। भोजन रात 9 बजे तक। थोड़ा टी.वी.। रात 9½ के आसपास नींद आ जाती है।

## नर्सों की हड़ताल(पेज तीन का शेष)

के मुख्य मंत्री को पत्र।

नर्सिंग कॉलेजों की छात्रों और अन्य अस्पतालों की नर्सों के जरिये एशियन तथा सेन्ट्रल अस्पतालों में कामकाज जारी। सेन्ट्रल के हॉस्टल में 31 मई की रात सेक्युरिटी गार्डों व अन्य और नर्सों में झगड़ा। चोटें पुरुष व महिला नर्सों को लगी और. ... और 18 नर्सों के खिलाफ पुलिस ने गम्भीर धाराओं के तहत एफ आई आर दर्ज की। नर्सों की परेशानियाँ बढती जा रही थी.... हड़ताल को एक महीना हुआ उस दिन, 7 जून को सेन्ट्रल अस्पताल की नर्सों ने डी.सी. की उपस्थिति में मैनेजमेन्ट के साथ समझौता कर लिया। तीन नर्सों से नौकरी से इस्तीफे लिखवाये हैं, पुलिस में दर्ज केस वापस ले लिये जायेंगे। सेन्ट्रल में नर्सों ने काम शुरू कर दिया है।

एशियन अस्पताल में नर्सों की हड़ताल जारी। बड़खल चौक से एशियन अस्पताल तक 8 जून को प्रदर्शन।......

*नई राहों के बारे में चर्चा यहाँ जगह की कमी के कारण नहीं कर पा रहे हैं। यह चर्चा अगले अंक में करेंगे।*

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी-551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14